International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

e/; xixk ?kkVh dhनवपाशाण युगीन संस्कृति : पशु पालन एवं कृशि तकनीक का mnHko ,oa fodkl

MkO lckl pUn iky
ikphu bfrgkl] lLdfr ,o ijkrRo foHkkx
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

नवपाषाण काल की अर्थव्यवस्था का आधारभूत तत्व कृषि से खाद्य–mRiknu rFkk पशुओं को पालतू बनाने की जानकारी है। कृषि तकनीक तथा पशुओं के उपयोग की जानकारी से स्थायी ग्राम्य जीवन का विकास हुआ। मानव इतिहास में इस स्तर का विशिष्ट महत्व है। इसी स्तर पर मनुष्य ने सर्वप्रथम कृषि करना सीखा। इस नयी कृषि जीवन–पद्धति dk ,d vR;Ur egRoi.k ifj.kke Fkk&fodfl r vFk0;oLFkk dk fodkl vkj tul[;k e पर्याप्त वृद्धि। नूतनकाल में ‘कृषि–कान्ति’ का सबसे महत्वपूर्ण ,o njxkeh ifj.kke ;g gvk कि इससे सीमित क्षेत्र का दोहन से ही अधिक संश्लिष्ट समाज अस्तित्व में आये और अंततः uxjh; thou fodfl r gvkA

e/; xxk?kkVh d enkuh {k= d mR[kfur LFkyk & fpjkn] ppj&drcij] luokj] ताराडीह, सोहगौरा, इमलीडीह, लाहुरादेवा, झूंसी, हेतापट्टी आदि स्थलों से नवपाषाण संस्कृति पर प्रकाश डालने वाले प्रमाण उपलब्ध हुए हैं और बहुत सम्भव है कि उस क्षेत्र में lo{k.k l कुछ अन्य पुरास्थल भी प्रकाश में आये हैं जो अभी भी जलोढ़ मिट्टी के नीचे दबे हों अथवा ijorh vkokl h; teko d uhp iM gkA ,lk irhr gkrk g fd enkuh {k= d LFkyk ij नवपाषाणकालीन मानव के आगमान से पूर्व घने जंगल विद्यमान थे, जो बाद में कृषि के लिए vFkok pkjkxkgk d fy, lkQ fd, x;A txyk dk lkQ dju d fy, lHkor% vkx dk i;kx Hkh fd;k x;k FkkA नवपाषाणिक संस्कृति के उत्खनित स्थलों का संक्षिप्त विवरण इस idkj g &

fpjkn

चिरांद (अक्षांश 25^{0} 48′ उ0, देशान्तर 84^{0} 50^ i0½ fcgkj d lkju fty e xxk d ck, rV ij fLFkr gA lkju fty e fLFkr gku d dkj.k ^fgj.k* vFk d vk/kkj ij dgk जा सकता है कि यह भू–भाग घने जंगलों से आवृत्त था। जंगली पशुओं में हिरणों की संख्या vi{kkdr ;gk vf/kd FkhA bl LFky ij lkLdfrd teko enkuh {k= d vU; LFkyk dh भांति बहुसांस्कृतिक है। यहाँ नवपाषाण काल से लेकर पाल वंश के काल तक का सांस्कृतिक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जमाव मिलता है। इस स्थल का उत्खनन बिहार राज्य पुरातत्व विभाग के राज्य निदेशालय }kjk lu 1963 l 1968&69 b0 rd yxkrkj fd;k x;kA lu 1969&70 vkj 1970&71 b0 में इस स्थल का पुनः उत्खनन हुआ, जिसमें पूर्व धातुयुगीन नवपाषाण संस्कृति का आवासीय जमाव प्रकाश में आया। यहाँ के दो खंत्तियों आर0डी0एक्स0 (15x10 ehVj½ vkj vkj0Mh0ch0 ¼10x10 मीटर) का उत्खनन टीले के पूर्वी और पश्चिमी भाग पर कि; x; ft le yxHkx 4-5 मीटर मोटा नवपाषाणिक आवासीय जमाव प्रकाश में आया। इस जमाव के 6 स्तर निर्धारित किये गये हैं, जिसमें नवपाषाणिक ijkl kefx;k] ljpuk, vkj vf/kokl d iek.k ikIr g, gA ;|fi fpjkn e ijorh lLdfr;k d ekV teko d dkj.k नवपाषाणिक धरातल का विस्तृत क्षेत्र में उत्खनन नहीं किया जा सका लेकिन इस धरातल से झोपड़ियों के फर्श के अवशेष और मिट्टी के बर्तन, लघु पाषाण उपकरण, पाषाण कुल्हाड़ियाँ आदि उपकरण, मृण्मूर्तियाँ और उपरत्नों पर पर मनके आदि सामग्रियाँ प्रकाश में आयी g ¼ukjk;.k 1970½ 1&35½A

चिरांद की नवपाषाणिक अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर थी। उत्तर भारत में नवपाषाणिक संस्कृति में कृषि द्वारा खाद्यान्न उत्पादन के महत्वपूर्ण प्रमाण यहाँ के उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। [kk|kUuk e pkoy d nku] Hkl h] xg] tk] eVj] mn के अवशेष प्राप्त हुए हैं। जंगली धान की एक प्रजाति ओरिजा पेरेनिष अभी भी उड़ीसा में पायी जाती है। ऐसा माना जाता है कि xxk ?kkVh vkj Hkkjr h; miegk}hi d mRrjorh Hkkx e /kku dh [krh dk ikjEHk gvk FkkA संभवतः नवपाषाणिक संस्कृति के समय जंगली अवसFkk d /kku d lxg l /kku dh [krh dk ikjEHk gvkA irhr gkrk g fd /kku dh [krh dk ikjEHk fpjkn] dkfYMgok] rFkk egxMk e gvk] tgk l txyh vkJ ikyr nkuk voLFkk dk /kku ikIr gvk gA xxk?kkVh e e ygjknok d mR[kuu l Hkh /kku dh [krh d ikphu iek.k miyC/k g, g ¼frokjh vkj अन्य 2001–2002: 54–59)। ऐसा लगता है कि चिरांद के नवपाषाणिक मानव को कृषि के _rpd d ckj e ijh tkudkjh Fkh D;kfd /kku tl h [kjhQ dh Qly vkj xg] tk vkj ex tl h jch dh Qlyk d iek.k ikIr g, gA lHkor% cjlkr d rjUr ckn ue Hkfe e बीज बो दिये जाते थे और लघु पाषाणोपकरणों से निर्मित हंसिये जैसे उपकरणों से फसल पक tku ij dkV yh tkrh FkhA

चिरांद से उपलब्ध अनाजों से ऐसा प्रतीत होता है कि नवपाषाणिक मानव जंगल की lQkb l y कर फसल काटने तक के कृषि सम्बन्धी विभिन्न क्रिया–कलापों से सुपरिचित थे। सर्वप्रथम नवपाषाणिक मानव ने कृषि के लिए जंगली भूमि को साफ किया होगा। संभवतः यह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

dk; lkefgd :i l fd;k tkrk jgk gkxkA o{kk vkj ik/kk dk dkVu dk ,d ek= mi;Dr midj.k iLrj dh dYgkMh FkhA

गंगा के मैदान में नवपाषाणिक काल में कृषि के साथ–साथ पशुपालन के भी प्रमाण प्राप्त हुए हैं। पशुपालन कृषि का अभिन्न अंग है। प्रचुर संख्या में उत्खनन से हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं। पशुओं में बकरी, सुअर, भैंसा, गैंडा, हिरण, बैल आदि dh igpku dh x;h gA lcl vf/kd l[;k e fgj.k dh gfMM;k ikIr gb gA rnijkUr Hkl] cy] lvj vkj cdjh dh हड्डियाँ आती हैं। पालतू पशुओं में कूबड़युक्त बैल, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर और कुत्ता सम्मिलित हैं। जंगली पशुओं के अन्तर्गत गैंडा, हिरण, ph;ry vkfn lfEefyr g D;kfd अधिकांश हड्डियों पर काटने के निशान हैं, इससे लगता है कि इन पशुओं को माँस के लिए काटा गया होगा (नाथ और विश्वास 1980: 115–124)।

नवपाषाणिक अर्थव्यवस्था में जलचरों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। चिरांद के उत्खनन l eNyh] lhih] ?kk?k vkfn dh gfMM;k ipj ek=k e miyC/k gb gA >hyk vkj ufn;k l eNfy;k idMh tkrh FkhA mR[kuu e if{k;k dh gfMM;k Hkh feyh gA txyh {k=k l [kku ;kX; ouLifr;k Hkh ,d= dh tkrh FkhA bl idkj fofHkUu lkrk l miyC/k lrfyr आहार नवपाषाणिक लोगों का अभीष्ट था।

pipj&drcij

यह स्थल (अक्षांश 25^0 35′ उ0, देशान्तर 85^0 20^ i0½ Hkh fcgkj e xxk unh d दाहिने तट पर स्थित वैशाली जनपद में है। इस स्थल का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के आर0एस0 बिष्ट द्वारा सन् 1977–78 b0 e fd;k x;k Fkk ¼bf.M;u vkfd;kyktht , fj0; 1977&78] 17&18½A ;gk d mR[kuu l rhu lLdfr;k d iek.k miyC/k g, g] ftue lcl ikphu iFke lkLdfrd dky dk rhu milkLdfrd dkyk & iFke&,] iFke&ch] rFkk iFke&lh e foHkkftr fd;k x;k gA iFke&, milkLdfrd dky e mlh idkj dh नवपाषाणिक पुरासामग्री उपलब्ध हुई है जैसा कि चिरांद के नवपाषाणिक स्थल से मिली है।

rkjkMhg

यह स्थल बिहार के गया जिले में प्रसिद्ध महाबोधि मन्दिर के दक्षिण–पश्चिम दिशा में fLFkr ,d Åp Vhy d :i e feyrk gA bl LFky dk mR[kuu fcgkj jkT; ijkrRo निदेशालय के डा0 ए0के0 प्रसाद द्वारा सन् 1981–82 में प्रारम्भ किया गया। यहाँ के उत्खनन से भी बहुसांस्कृतिक जमाव प्राप्त होता है, जो नवपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक

dk gA यहाँ नवपाषाणकालीन धरातल का उद्घाटन सन् 1984–85 b0 d mR[kuu l gvk ¼bf.M;u vkfd;ksykth , fj0; 1984&85] 9&10] bf.M;u vkfd;ksykth , fj0; 1986&87] 23&24] bf.M;u vkfd;ksykth , fj0; 1987&88] 9&11½A yxHkx 60 lseh0 eksV नवपाषाणिक (प्रथम सांस्कृतिक काल) के स्तर से हाथ से बने मिट्टी के बर्तन, नवपाषाणिक कुल्हाड़ियाँ, लघु पाषाण उपकरण, हड्डी के उपकरण, पकी मिट्टी की सामग्रियाँ और बाँस–बल्ली के निशान से युक्त जली मिट्टी के टुकड़े आदि मिले हैं। इस स्थल से विभिन्न आकार के चूल्हे भी प्रकाश में आये हैं।

lsuqokj

इस पुरास्थल (अक्षांश 24^0 56′ उ0, देशान्तर 83^0 56′ पू0) को प्रकाश में लाने का श्रेय बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के पुरातत्वविदों को है। fcgkj d jksgrkl ftyk e fLFkr ;g LFky dej igkfM;k d cgr fudV gA bl {ks= e lu 1986&87 b0 e fd;s x;s पुरातात्विक अन्वेषणों में प्रारम्भिक कृषिपरक संस्कृति के कई स्थल कैमूर के पास मैदानी क्षेत्र से प्रकाश में आये हैं, जिनमें से सेनुवार नामक स्थल का उत्खनन बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय d ch0ih0 flg u fd;k ¼flg 2000&2001½A dnjk uked NksVh unh d rV ij fLFkr bl स्थल के उत्खनन से भी नवपाषाणिक सांस्कृतिक tek o d Åij db lLdfr;k d iek.k उपलब्ध हुए हैं, जो क्रमशः प्रथम नवपाषाणिक, द्वितीय ताम्रपाषाणिक, तृतीय एन0बी0पी0 वेयर तथा चतुर्थ कुषाण कालीन है। प्रथम नवपाषाणिक सांस्कृतिक काल को प्रथम–ए तथा iFke&ch midkyk e foHkkftr fd;k x;k gA iFke&ch midky d lkLdfrd dky l ताँबे के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं, इसीलिए उसे नवपाषाणिक और ताम्रपाषाणिक संस्कृति के ladze.k dky l lEcf) fd;k x;k gA

gxkSjk

नवपाषाणिक संस्कृति के प्रमाण सोहगौरा (अक्षांश 26^0 30′ उ0, देशान्तर 83^0 15^ 32^^ iw0½ d निचले धरातल से भी मिले हैं। यह स्थल उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में आमी और राप्ती नदियों के संगम पर स्थित है। इस स्थल का उत्खनन गोरखपुर विश्वविद्यालय के Mk0 ,l0,u0 pronh u lu 1962&63 vkj lu 1975&76 b0 e fd;k Fkk ¼bf.M;u vkfd;ksykth , fj0; 1974&75] 46&47] pronh 1985% 101&108½A

beyhMhg [kqn

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

यह पुरास्थल (अक्षांश 26^0 30′ 30′′ उ0, देशान्तर 83^0 12^ 5^^ i0½ xkj[kij tuin d दक्षिण पश्चिम भाग में घाघरा की सहायक कुआनों नदी के बायें तट पर स्थित है। इस क्षेत्र dk lo{k.k lu 1990&91 b0 e ikjEHk gvkA ;g vkokl h; LFky xkj[kij l yxHkx 40 fdeh nf{k.k e fLFkr gA सन् 1992 ई0 में इमलीडीह में किये गये उत्खनन में नवपाषाण lLdfr d iek.k miyC/k g, g] ft le gkFk l cuh g; jLl h d Nki oky feVVh d cru] vydr ik= vkj vU; ijk lkefx;k lfEefyr g ¼flg 1992&93% 120&122½A iFke सांस्कृतिक काल से बाँस–बल्ली के निशान से युक्त जली मिट्टी के टुकड़े, मिट्टी के बने फर्श और चूल्हे प्राप्त हुए हैं। यहाँ से उपलब्ध जिन पशुओं की पहचान की गयी है उनमें गाय, cy] HkM] cdjh] lvj] fgj.k vkj HkfM;k vkfn lfEeyr gA vuktk d iek.k l ,lk yxrk g fd ;gk d fuokl h jch] vkj [kjhQ nkuk Qlyk l ifjfpr FkA

ygjknso

यह पुरास्थल (अक्षांश 26^0 46′ उ0, देशान्तर 82^0 57′ पू0) उत्तर प्रदेश के सन्त कबीर uxj tuin e cLrh&गोरखपुर मार्ग पर भुजैनी चौराहे से 5 किमी दक्षिण जगदीशपुर गाँव के leh i fLFkr gA ikjEHk e ;g LFky rh u rjQ l >h y l f?kjk gvk FkkA bl le; bld अधिकांश भाग में खेती होती है, केवल पश्चिमी क्षेत्र में जलभराव है। यह स्थल पूर्व से पश्चिम 220 eh Vj rFkk mRrj l nf{k.k 140 eh Vj d {k= e Qyk gvk gA bl LFky d पुरातात्विक महत्व को प्रकाश में लाने का श्रेय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो0 शैल नाथ चतुर्वेदी को है (चतुर्वेदी 1980: 339–340, 1985: 105)। इस स्थल का उत्खनन उत्तर प्रदेश jkT; ijkrRo foHkkx dh vkj l डा0 राकेश तिवारी के निर्देशन में 2001 तथा 2002 में किया x;k ¼frokjh ,o vU;] 2001&2002% 54&59½A

>¡l h

झूँसी (अक्षांश 25^0 26′ 10′′ उ0, देशान्तर 81^0 54′ 30′′ पू0) पहचान प्रतिष्ठानपुर से की xb gA xxk&;euk d lxe ij bykgkckn uxj d Bhd lkeu fLFkr yxHkx 3 fdeh d {k= में विस्तृत इस टीले का अधिकांश भाग वर्तमान झूँसी गाँव द्वारा आबाद है। इस स्थल का उत्खनन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग द्वारा 1994&95 e NkV ieku ij fd;k x;kA len di d Vh y ij Åij l uhp rd ,d lkiku [kUrh e fd; x; mR[kuu l 15-5 eh Vj d vkokl h; teko miyC/k g,A tgk तक इस स्थल की प्रथम संस्कृति का सम्बन्ध है इसमें नवपाषाण युगीन पुरावशेषों की प्राप्ति

होती है। रस्सीछाप मृदभाण्ड, लघुपाषाण उपdj.k bR;kfn d feyu l bl LFky dh ikjfEHkd lLdfr d Lo:i dk le>k tk ldrk gA

grkiVVh

झूँसी से लगभग 14 किमी उत्तर गंगा के बायें तट पर स्थित हेतापट्टी (अक्षांश 25^{0} 29′ 0′′ उ0, देशान्तर 81^{0} 55^ 31^^ i0½ d mR[kuu l Hkh >lh dh rjg dk lkLdfrd vude feyk g (पाल 2007–2008)। यहाँ का प्रथम सांस्कृतिक काल नवपाषाण संस्कृति से सम्बन्धित है, जिसमें विविध प्रकार की पुरासामग्रियाँ नवपाषाण संस्कृति के पुनर्निमाण में lgk;d g ¼iky&2008½A

egxMk

यह पुरास्थल (अक्षांश 24^{0} 54^ 50^′ उ0, देशान्तर 82^{0} 3^ 30^^ i0½ bykgkckn l 80 किमी की दूरी पर दक्षिण–पूर्व दिशा में कोरांव तहसील में बेलन नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। इस स्थल पर उत्खनन का कार्य 1976–77 ई0 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुराविदों ने स्वर्गीय प्रो0 जी0आर0 शर्मा के निर्देशन में किया था। यहाँ से नवपाषाण युगीन एकल सांस्कृतिक जमाव प्रकाश में आया है।

dkyfMgok

कोलडिहवा (अक्षांश 24^{0} 54′ 30′′ उ0, देशान्तर 82^{0} 2^ i0½ bykgkckn l nf{k.k io दिशा में 80 किमी की दूरी पर बेलन नदी के बायें तट पर स्थित है। 1974–75 में इलाहाबाद विश्वविद्यालयों के पुराविदों ने इस स्थल को प्रकाश में लाने का कार्य किया। नवपाषाण काल का यह प्रथम उत्खनित प्राथमिक सन्दर्भ का स्थल है, जहाँ से पालिशदार गोलाकार dYgkfM;k ikIr gb FkhA

lUnHk xUFk lph

pronh] ,स0एन0, 1980, एक्सकैवेशंस एंट सठियाँव–फाजिलनगर, डिस्ट्रिक्ट देवरिया एण्ड एक्सप्लोरेसंस इन द डिस्ट्रिक्स ऑफ गोरखपुर एण्ड बस्ती ऑफ उत्तर प्रदेश, हिस्ट्री ,.M vkd;kyktk] okY;e 1½ 339&340

pronh] ,l0,u0] 1985] ,Mok l vkQ foU/;u fu;kfyfFkd ,.M pkYdkfyfFkd dYpl

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

टू द हिमालय तराई: एक्सकैवेंशन एण्ड एक्सप्लोरेसंस इन सरयूपार रीजन ऑफ उत्तर प्रदेश, मैन एण्ड इनवायरेन्मेंट, IX½ 101&108A

तिवारी, राकेश आर0के0 श्रीवास्तव एवं के0के0 सिंह, 2001–2002, एक्सकैवेशन एट लहुरादेवा, डिस्ट्रिक्ट सन्त कबीर नगर, उत्तर प्रदेश, पुरातत्व 32: 54–59A

bf.M;u vkD;ykth] , fj0; 1974&75] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykth] , fj0; 1977&78] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykth] , fj0; 1984&85] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykth] , fj0; 1986&87] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykth] , fj0; 1987&88] ub fnYyhA

ukjk;.k] ,y0,0] 1970] fu;kfyfFkd lfVyeUV ,V fpjkn] tuy vkQ fcgkj fjlp lkslk;Vh 56 ¼1½ 1&35A

सिंह, पुरूषोत्तम, 1992–93, आर्क्योलॉजिकल एक्सकैवेशंस एट इमलीडीह खुर्द – 1992, ikX/kkjk 3½ 21&35A

iky] t0,u0] 2007&2008] n vyh Qkfex dYpj vkQ n fefMy xxk lyu fon स्पेशल रिफरेंस टू द एक्सकैवेसन्स एट झूँसी एण्ड हेतापट्टी, प्राग्धारा 18: 263–282।

iky] t0,u0] 2000] elkfyfFkd ,.M fu;kfyfFkd lklk;Vht vkQ n foU/;kt ,.M n मिडिल गंगेटिक प्लेन, सोशल हिस्ट्री एण्ड सोशल थ्योरी (वी0डी0 मिश्र vkj t0,u0 iky lEikndh] i0 7&13] bykgkckn½ ikphu bfrgkl] lLdfr ,o ijkrRo foHkkx] bykgkckn विश्वविद्यालय।